IMPACT FACTOR 6.10

ISSN 2348- 5825

International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for All Subjects

INDO ASIAN PHILOSOPHER

UGC APPROVED,REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCHJOURNAL

Issue : XVI, Vol. I

Year-VIII,Bi-Annual(Half Yearly)

(Oct= 2020 To Mar. 2021)

Editorial Office :

'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Website

www.irasg.com

Contact : - 02382 - 241913
09423346913 / 09637935252
09503814000 / 07276301000

E-mail :
visiongroup1994@gmail.com
interlinkresearch@rediffmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published by :

Indo Asian Publication,

Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.)India

Price : ₹ 200/-

EDITOR IN CHIEF

Dr. Balaji Kamble
Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur (MS) India

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Baliram P. Lahane
Joint Director, Higher Education,
Nanded Region, Nanded (M.S)

Dr. Nilam Chhangani
Head, Dept. of Economics,
S.K.N.G. Mahavidyalaya,
Karanja Lad, Dist. Washim(M. S.)

DEPUTY EDITOR

Dr.M. B. Karajgi
Head, Dept. of English,
Smt. Sushiladevi Deshmukh College,
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. M. G. Babare
Head, Dept. of Zoology
A. S. C. College,
Naldurg, Dist. Osmanabad (M.S.)

CO - EDITOR

Dr. Mahadev S. Kamble
Dept. of History,
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Vanita S. Jadhav
Madar Terisa B.Ed. College,
Dharwad, Dist. Dharwad
(Karnataka)

MEMBER OF EDITORIAL BOARD

Dr. Balasaheb S. Patil
Head, Dept. of Economics,
C. K. T. College,
Panvel, Dist. Raigarh (M.S.)

Dr. Sudhir Gavhane
Head,Dept. of Economics,
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Dr. Mohmmad T. Rahaman
Dept. of Biomedical Science,
International Islamic University,
Mahkota (Malasiya)

Dr. R. R. Gavhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. College,
Buldana, Dist. Buldana(M.S.)

Dr. Bhaskar S. Wazire
Head, Dept. of History,
Sitabai Arts College,
Akola, Dist. Akola (M. S.)

Dr. S. S.Sawant
Head, Dept. of Hindi,
Wilingdon,Mahavidyalaya,
Sangli, Dist. Sangli (M.S.)

Dr. Sivvappa Rasapali
Dept. of Chemistry,
UMASS, Dartmouth,
MA (United States)

Dr. Rajpal Bhullar
Dept. of Political Science,
D.A. V. College,
Ambala, Dist. Ambala(Hariyana)

Issue : XVI, Vol. I
IAP
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2348-5825
Oct. 2020 To Mar. 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	Studies on Effect of different Culture Filtrates of fusarium species on shoot of Legume **R. S. Bajgire**	1
2	Physico-Chemical Parameter of Nanda Village Pond in bhokar Tahshil of Nanded District **V. B. Rathod, P. R. Totawar**	6
3	The Study of Nissim Ezekiel's Philosophy and Psychology **R. H. Sagar**	12
4	Geopolitical History of Aundh State **Dr. S. G. Shinde**	19
5	Evaluation of Sports Fitness in Contemporary Situation **Dr. R. P. Karanjkar**	29
6	The study of Zooplankton Diversity for Indicator Species and Pollution Status of Rena river at Mahapur Dist. Latur Maharashtra **D. P. Katore**	33
7	विष्णू प्रभाकर के उपन्यासो में नारी-विमर्श **डॉ. महावीर रामजी हाके**	38
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची धर्मांतराची भुमिका **योगेश मधुकर चव्हाण**	42
9	विदर्भातील जमिनी आणि त्यांचे व्यवस्थापन **डॉ.संतोष उध्दवराव धामने**	48
10	स्त्री भ्रूणहत्या आणि सामाजिक दृष्टीकोण **डॉ. प्रशांतकुमार वनंजे**	57

IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2348-5825
Indo Asian Philosopher (IAP)
Issue : XVI, Vol. I
Oct. 2020 To Mar. 2021
www.irasg.com

Research Paper 7 Hindi

विष्णू प्रभाकर के उपन्यासो में नारी-विमर्श

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी

स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रश्चात स्त्रियाँ समाज के हर क्षेत्र में आगे आयी है। आज स्त्री-पुरुषों के साथ कदम से कदम बढ़ाती हुई समाज के प्रति अपने कर्तव्य को बहुत अच्छी तरह निभा रही है। किंतु बदलते समय में स्त्रियों के साथ बहुत अन्याय भी हुआ है। समाज में स्त्री के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदला है। वह भोगवादी संस्कृति का अंग बन गई है। उसे व्यावसायिक प्रचार-प्रसार के रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है। आधुनिक वेशभूषा, फूहडता और स्वच्छंत-श्रृंगार को स्त्री-पुरुष द्वारा कई प्रकार की यातनाओं की शिकार हो रही है।

घर के बाहर काम करती हुई महिलाएँ अधिक से अधिक पुरुषें के संपर्क में आती है, इस कारण वे अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। "नारी का वास्तविक संघर्ष घिसी-पिटी स्थितियाँ मान्यताओं के खिलाफ है।"[१]

'स्वप्नमयी' उपन्यास की अलका जीवन में प्रयोगों को अधिक महत्व देती है, पर वह साहसी है। स्थितियों का मूल्यांकन करते हुए वह कहती है कि "लगता है जैसे मैं गलती कर बैठी हूँ। जैसे मैं अपने हाथों से गला घोंट रही हूँ, लेकिन प्रयोगों के लिए अपना जीवन खपा देने वाले महान वैज्ञानिकोंकी कहानियाँ जो मैंने पढी हैं। उनको शायद इसी तरह का अनुभव होता रहा होगा। इसलिए मैं घबराउँगी नहीं, दृढता से मार्ग पर चलूँगी और जब तक इसकी जड तक नही पहूँच जाउँगी मैं यहाँ से नही लौटूंगी"[२]

'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास में विष्णुजीने इस प्रकार नारी की वासतविकता से परिचय कराया है कि "ऊपर से देखने में लगता है कि नारी हरक्षेत्र में अग्रणी है। वह पुरुषें के साथ मिलकर काम कर रही है।"[३] किंतु नारी का वास्तविक संघर्ष स्वयं से ही है। वह जितनी प्रगतिशील दिखाई देती है, उससे कही अधिक संघर्षरत है।

स्त्री के लिए यह माना जाता है कि "वह स्वतंत्र रुप से कोई भी निर्णय नही ले सकती । अत: उसे अपने बारे में सोचने का कोई अधिकार नही है ।"[४]

कन्या के जन्म लेने के साथ ही उसके संहार की कल्पना कर ली जाती है । इसका एक मात्र कारण यह है कि एक स्त्री दूसरी स्त्री की शत्रू मानी जाती है । "प्राचीन काल में हमारा जो कुछ भी आदर्श रहा हो, आज का युग उसकी कोई चिंता नही करता । सुना है, राजपूत लोग कन्या को प्रसूति में ही गला घोंट कर मरवा देते थे । किसी को अपना दामाद बनाता वे अपराध समझते थे । शायद उस काल में कन्या-हरण को लेकर जो युद्ध होते थे उनकी भीषण हिंसा से बचने के लिए उन्होंने अन्य हिंसा स्वीकर कर ली थी ।"[५]

नारी की पौराणिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए 'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास में विष्णु प्रभाकर जी कहते है कि "सहस्त्र फण शेषनाग के । वह सत्ता का प्रतीक है । विष्णु उसी को वश मे करके सोते है । अर्थात सत्ता के सभी रुपों को वश में कर लिया है उन्होंने और जो सत्ता में सबसे महत्वपूर्ण है पैसा अर्थात लक्ष्मी वह उनके चरण दबाती है । दास है उनकी । जब सब अपने-अपने स्थान पर आ जाते है तो विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल पर बैठे ब्रह्मा सृष्टि का निर्माण करते है । अर्थात वह प्रतीक प्रमाणित करता है कि सत्ता कैसी भी हो मनुष्य की वशवर्तिनी है, स्वामिनी नही है उसकी ।"[६]

हम प्रगतिवादी बनने का कितना भी ढोंग कर ले परंतु हमारी मानसिकता आदिम है । समाज में नारी की अपनी पहचान बडी मुश्किल से बन जाती है । वह किसी की बेटी, पत्नी और माँ है । उसके जीवन का उद्देश्य अपने पति को रिझाना और मनाना है । विवाह में तो उसका दान किया जाता है और प्राय: दान में मिली वस्तू को वह सम्मान नही मिलता जिसकी वह हकदार होती है ।

विष्णु प्रभाकरजी के सभी उपन्यासों की प्रमुख पात्र नारी है । इस कारण उन्होंने नारी की समस्याओं को बडी अहमियत से उठाया है । पँजीवादी समाज में नारी भोग-विलास की वस्तु बनकर रह गई है, जिस पर पुरुष का पूरा अधिपत्य हे । उसका अपना कोई अस्तित्व और गौरव नही है ।

निशिकांत की कमला साहसी है, अपने अधिकारों के प्रति सजग है । पंडितजी जब उस पर सहानुभूति दिखाते है और विवाह करने की सलाह देते है तब वह क्रोध से भभक उठती है । अपने निर्णय को सही सिद्ध करते हुए कही है कि "आपको क्रोध आ रहा है पर मैं पूछती हँ कि आप मेरे घर क्यो आये? आपको क्या अधिकार था मेरा अपमान करने का? कोई आती है, प्रणय-दान मागता है । कोई विवाह की भीख माँगता है? कोई मुझ पर दया करता है । आखिर पुरुषों को हुआ क्या है? क्यो वे नारी जीने नही देते? क्यों वे उसकी टेक बनना चाहते है?"[७]

नारी को अपनी स्वतंत्र सत्ता बनाये रखने के लिए संघर्ष के लिए संघर्ष करना पडता है । नारी की स्वतंत्र सत्ता और उसकी सैक्स इमेज से कोई नाता नही है । उकस अर्थ है समान अधिकार, समान दायित्व । एक स्वस्थ समाज के निर्माण में स्त्री-पुरुष दोनों समान रुप से भागीदार है । जीवन की सार्थकता उसे जीने में है 'तट के बंधन' में विष्णु जी कहते है कि "केवल जीने में कुछ रस नही है हमें जीवन का निर्माता होना चाहिए और यह तभी हो सकता है जब हम अपने को ही नही, दूसरों को भी महत्व दें ।"[८] विष्णू प्रभाकर जी ने नारी को जगाने का कार्य किया है वह जागेगी तब ही एक ओर महिला लेखिकाओंको नारी संवेदना से अधिक उनके भौतिक एवं बाहरी चित्रण में आनंद आता है वही दूसरी और

विष्णु प्रभाकर जी ने नारी विमर्श के धरातल पर नारी की संवेदनाओं को बरकरार उनके मनोभावों का स्वस्थ चित्रण किया है ।

सामाजिक संवेदना का वर्गीय स्वरुप :

समाज मुख्य रुप से निम्न, मध्य और उच्च वर्गो में बँटा है । इस वर्गीकरण का प्रमुख आधार आर्थिक है । इन तीनों ही वर्गों की सामाजिक संवेदनाओं को विष्णु प्रभाकरजी ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है ।

१) निम्न वर्ग :

निम्नवर्गीय समाज किसी भी मान्यता और नियमों में नही बँधा है । वह अपने आप में पूर्णता स्वतंत्र है । आर्थिक जर्जरता एवं विषमता के चिन्ह उस पर स्पष्ट रुप से देखे जा सकते है । उस पर किसी का कोई दबाव, बंधन और हस्तक्षेप नहीं है । निम्न वर्ग की स्थितिको देखकर ज्ञात होता है कि यह वर्ग हर स्तर पर हर परिस्थिति में विवश और असहाय है । उनके जीवन की डगर सरल नहीं है तब उनकी सुखद स्थिति के बारे मे सोचना और भी कठिन काम है ।

बलात्कार को लेकर निम्न वर्ग की अलग सोच है । उच्चवर्गीय महिलाओं के लिए इसकी त्रासदी को झेलता जहाँ मानसिक संघर्ष है वही निम्न वर्ग के लिए उसे भूलाने में अधिक समय नही लगता । अद्धनारीश्वर में "निम्न वर्ग की किरण के साथ बलात्कार होता है किंतु वह बहुत जल्द सामान्य हो जाती है ।"[९]

समाज के हर वर्ग में नारी का कही न कहीं शोषण होता है । इस कारण मधवर्ग की पहली आवश्यकता आर्थिक सबलता हैं । नारी की आत्मनिर्भरता ने सामंती विचाराधारा की कलई खोल दी है । निम्नवर्ग की अपेक्षा मध्यवर्ग वर्जनाओं को सबसे अधिक झेलता है । इसीलिए सबसे अधिक वही डरपोक है ।

२) मध्य वर्ग :

मध्यवर्ग का समाज सामाजिक नियमावली, रीति-रिवाज प्रीाा तथा संस्कारों को सहेजे हुए है । इसी वर्ग की अधिक महत्वाकांक्षाएँ है । हर बार कसौटी पर इसे ही कसा जाता है । यह वर्ग केवल अपने लिए नही जीता बल्कि-कभी दूसरों को दिखाने के लिए जीता है ।

विष्णु प्रभाकर जी के उपन्यासों में चित्रित संवेदना मध्यवर्ग का ही प्रतिनिधित्व करती है । "विष्णु जी को सर्वाधिक चिंता मनुष्य और उसके संबंधो की है । शोष सभी कुछ उसी के लिए है । अतः वह महत्व का होते हुए भी गौण है । यही कदाचित विष्णुजी की लेखकीय दृष्टि भी है, जो किन्ही वादों से न बँधकर केवल मानवता को स्वीकार करती है ओर उसी के माध्यम से अपने आपको प्रस्तुत करने का प्रयास करती है ।"[१०]

विष्णु प्रभाकर जी ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्ग के खोखलेपन को प्रस्तुत किया है । साथ ही उन्होंने मध्यवर्गीय संस्कारों में पली-बढी नारीका सदैव ही पक्ष लिया है । विष्णु जी मध्यवर्ग की विवशता को अभिव्यक्त करते हुए कहते है कि "सच । किने विवश है हम मध्यवर्ग के लोग । सुविधा के पिता का तार देना बुरा लग सकता है पर सच वही है नैतिकता-अनैतिकता के मायाजाल में फँसा यह वर्ग कब मुक्त होगा ।"[११] मध्यवर्ग सर्जनाओं को सबसे अधिक झेलता है ।

३) उच्च वर्ग :

आर्थिक तथा भौतिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण उच्चवर्ग की यह विशेषता है कि वह समाज की कोई चिंता नही करते । इस वर्ग ने अपने मापदंड स्वयं बनाये है । इस कारण कही-कहीं इस वर्ग में दोहरे मापदंड दिखाई देते है । विष्णुजी उन पर कटाक्ष करते हुए कहते है कि, "शायद मनुष्य की यही नियति है पर उनमें से अधिकांश अंदर के मनुष्य के अस्तित्व से प्राय: बेखबर रहते हैं और दोहरे मूल्यों को ही सच मानकर जीते रहते हैं । लेकिन कुछ लोग ऐसे भी है जो मूल्यों के इस दोहरेपन से परिचित हो जाते है और इसीलिए उम्र भर तनावग्रस्त रहते है ।"१२

"कोई तो" उपन्यास की चंदा का विवाह हरिराम के साथ होता है । हरिराम उच्च वर्ग का है । जब वह निम्न जाति की चंदा के साथ विवाह करता है तब उच्च वर्ग के लोगों द्वारा चंदा का अपमान किया जाता है । उनकी इसी स्थिति पर विष्णु जी अपने विचार अभिव्यक्त करते हुए कहते है कि, "उँची जाति के दादा लोग नही चाहते कि उनके वंश के पवित्र रक्त में किसी वर्ग का अपवित्र रक्त मिले ।"१३

इस प्रकार उच्च वर्ग आर्थिक रुप से सक्षम है इसी कारण वह अन्य वर्गों से स्वयं को श्रेष्ठ मानता है । विष्णु प्रभाकर जी स्त्री-पुरुष के लिए होने वाले अलग-अलग विधानों पर करारा व्यंग्य करते है ।

संदर्भ संकेत :-

१) स्वप्नमयी - विष्णु प्रभाकर पृ.स. १५४
२) वही पृ.सं. १५४
३) अद्धनारीश्वर - विष्णु प्रभाकर पृ.सं. २१२
४) कोई तो - विष्णु प्रभाकर पृ. सं. २९३
५) वही पृ.सं. ८५
६) वही पृ.सं. ९३
७) निशीकांत-विष्णु प्रभाकर पृ.सं. २३३-२३४
८) अद्धनारीश्वर-विष्णु प्रभाकर पृ.स. १७२
९) वही पृ.सं. २४५
१०) विष्णु प्रभाकर - व्यक्ति और साहित्य - डॉ. महिपसिंह पृ. सं. ११७
११) कोई तो - विष्णु प्रभाकर पृ.सं. ८१
१२) अर्द्धनारीश्वर - विष्णु प्रभाकर पृ.सं. १६७
१३) कोई तो - विष्णु प्रभाकर पृ.सं. १८०